महिला दिवस : भारतीय संदर्भों में, एकनजर

उर्मिला शर्मा
अतिथि प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
रामजस कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

सारांश

महिला दिवस के मनाने से किन्हीं मायनों में ज्यादा सही है उनकी स्थितियों को समझना। समझकर उनका आकलन करना तथा उन तमाम मुश्किलों का हल खोजना जो उनके रास्ते की रूकावट बन कर खड़ी हैं। भारतीय सन्दर्भ में देखा जाए तो तमाम महिलाएँ, महिला होने के खाने में ही फिट नहीं हो पाती। स्त्री, महिला, नारी, अबला ऐसे अनेक शब्द है जो इस जाति के हालातों से रुबरु कराने के लिए हमारे सामने पेश हो जाते है। महिला दिवस के मायने तभी सार्थक होंगे जब यह दिवस स्त्री विशेष की बात न करके सम्पूर्ण जाति की बात करेगा। जो महिलाएँ स्व को खोज चुकी हैं, या जो स्व को खोज में निकल चुकी हैं केवल उनका लाभ नहीं देखना है। लाभ उनका देखना है जिन्हें 'स्व' के क्या मायने है इसका भी पता नहीं है। स्त्री के साथ सहयोग, सहभाग तथा समायोजन को अपनाना पड़ेगा तभी महिला दिवस का महत्व सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द महिला दिवस, महिलाओं की स्थिति, सामाजिक उत्तर दायित्व, विशेषकाल तथा महिलाओं के स्थिति, आज की महिला, कुछ सुझाव

प्रस्तावना

महिला दिवस यानि आठ मार्च का दिन जब–जब आता है ठहरे हुए जल में मानों पत्थर फेंककर चला जाता है। उससे कुछ गोलनुमा लहरें अवश्य फैलती सी नज़र आती हैं, बिल्कुल गोल। और गोल... और गोल। न कोई ओर न कोई छोर। जिस प्रकार से पैदा हुई उसी प्रकार धीरे–धीरे शून्य में समा जाती हैं। पैदा की गई थी जबरन और रोती बिलखती विलीन हो गई, न कोई विशेष दृष्टि उसकी ओर जा पाई और न ही कोई महत्त्व सिद्ध कर पाई। यह दिवस महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है तो कई प्रश्न खड़े कर देता है। क्या इससे महिलाओं का महत्त्व सिद्ध करने की कोशिश की जाती हैं? या संसार के प्रति उनके अविस्मरणीय कर्त्तव्य को स्मरण किया जाता हैं? या उनकी शक्ति और सामर्थ्य के प्रति कुछ आभार व्यक्त करने की कोशिश की जाती है?

महिलाओं का क्षेत्र, स्थितियाँ एवं सीमाएँ

सर्वप्रथम यदि महिलाओं के महत्त्व सिद्ध करने की बात है, तो नारी में शक्ति का वास है। नारी के बिना समाज का कोई अस्तित्त्व नहीं। नारी हमेशा नर से बढ़कर रही है। जैसे 'शिव' से 'इ' हटा देने पर 'शव' बन जाता है, नारी में भी 'ई' शक्ति का द्योतक है।

संसार के प्रति अविस्मरणीय कर्त्तव्य की जहाँ तक बात है नारी पुरुष के बरअक्स कर्त्तव्य पालन के प्रति अधिक निष्ठावान है। स्वयं को मिटाकर, भूलकर हमेशा देती ही रहती है। लेने के लिए वह कभी खड़ी नहीं होती। उसकी आशाएँ, आकांक्षाएँ अपने आस–पास रहने वालों पर हो टिकी रहती हैं। नारी के इसी रूप को छायावादी कवि प्रसाद ने अपनी रचना कामायनी में कुछ इस तरह सिमेटा है –

''क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प अश्रु–जल से अपने
तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने से सपने।''

(कामायनी–जयशंकर प्रसाद पृष्ठ सं. 57, राजकमल प्रकाशन, संस्करण–1994)

वह बेटी, बहन, पत्नी, माँ अनेक रूपों को एक साथ सुचारू रूप से संचालित करती है। नारी अनेक संबंधों के केन्द्र में रही है। लेकिन उसे न तो उसके अधिकारों का ही ज्ञान हो पाया और न ही कोई उत्तरदायित्त्व प्राप्त हुआ। महादेवी वर्मा ने अपने निबंध 'हमारी श्रृंखला की कड़ियाँ' में इन्हीं विचारों को कुछ इस रूप में रखा : ''अनेक संबंधों का केन्द्र होने तथा परिवार और समाज विशेष से सम्बद्ध रहने के कारण उसे सामाजिक विकास के लिए भी विशेष अधिकार और उत्तरदायित्त्व प्राप्त हो जाना अनिवार्य है। अतः नागरिक को राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों क्षेत्रों में समान रूप से अपना स्थान तथा कर्त्तव्य जान लेना उसमें संशोधन या परिवर्तन के लिए स्वाधीनता प्राप्त कर

लेना नितान्त आवश्यक है। नागरिक होने के कारण स्त्री को भी दोनों ही अधिकारों की आवश्यकता सदा से ही रही है और रहेगी, परन्तु प्राचीन काल से अब तक उनके अनुकूल स्वत्वों को देने तथा समयानुसार उनमें परिवर्तन की सुविधाएँ सहज करने की ओर किसी का ध्यान नहीं गया।'' (श्रृंखला की कड़ियाँ–महादेवी पृष्ठ सं. 19, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण–2012)

यह निबंध 1931 में लिखा गया जब देश स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था, परन्तु ऊपरी आवरण यथा वोट डालने या चुनाव लड़ने जैसे नागरिक अधिकार तथा कुछ सामाजिक अधिकारों को छोड़ दें तो आज देश की हर महिला स्वतंत्रता के असली मायने तलाशती दिखाई देगी। समाज उसे चाहे किसी खड्ड में धकेलने की कोशिश क्यों न करे वह हमेशा कर्त्तव्यों को निभाते हुए ऊपर उठने की कोशिश करती रहती है। कई बार ऐसा लगता है मानो जिस मिट्टी से वह गढ़ी गई है, उसे जैसे भी तोड़ा–मरोड़ा जाए वह मिट्टी फिर से एक नव रूप धारण कर खड़ी जा जाती है। उसकी जिजीविषा आगे की ओर धकेलती नहीं अपितु उसे और सुदृढ़ व सक्षम बना उसे फिर से प्रस्तुत कर देती है।

वह आत्मनिर्णय लेने के लिए छपटा उठती है। स्व की पहचान बनाने की कोशिश करती है। समाज में स्त्री नैतिकता की बात करते हुए जर्मेन ग्रीयर ने कहा है– ''स्त्री शक्ति का अर्थ है स्त्रियों का आत्मनिर्णय और इसका अर्थ है– पितृवादी समाज का कूड़ा–कबाड़ा बुहारकर बाहर फेंकना होगा। स्त्री के पास एक ऐसी नैतिकता जो उसे उत्कृष्टता के लिए अयोग्य न ठहराए, जो आध्यात्मिक अपाहिज न करार दे, गढ़ने के लिए गुंजाइश चाहिए।'' (बधिया स्त्री– जर्मेन ग्रीयर, अनु. मधु बी. जोशी, पृष्ठ 106, द्वितीय स्त्रोत– इन्द्रप्रस्थ भारती, अप्रैल–जून, 2013/पृष्ठ 33)

उपर्युक्त पंक्तियों में महिला दिवस के मायनों की सटीक खोज की जा सकती है। पूर्वाग्रहों तथा पितृसत्तात्मक सोच का चोला उतार कर फेंकना होगा। सहयोगी और सहभागी को उसका अपना उचित स्थान प्रदान करना होगा जिसकी वह हकदार है।

इस दिवस पर सवाल यदि महिलाओं का आभार प्रकट करने का है तो आभार उसका प्रकट किया जाता है तो सहभागी न हो। वह हर परिस्थिति में पुरुष के साथ उसका संबल बनकर खड़ी रहती है। परन्त वह पुरुषों से अभी भी बहुत पीछे है। उसकी प्रगति की गति वह नहीं जो पुरुष की है। इन कारणों पर सीमोन द बोउवार ने विचार करते हुए लिखा है– ''स्त्री हर समय पीछे मुड़कर देखती है कि उसने कितना रास्ता तय किया है। इसलिए उसकी प्रगति में बाधा पहुँचती है। वह सम्माननीय कैरियर भले प्राप्त कर सकती है, लेकिन कोई महान उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाती। ..... पुरुषों के जगत में एक नवागत प्राणी की तरह अभी–अभी तो वह आई है। किसी प्रकार उसको प्रवेश की इजाजत मिली है। पुरुषों के इस जगत में औरत अब भी अपने आपको खोजने मे व्यस्त है। (स्त्री उपेक्षिता– सीमोन द बोउवार, अनु. प्रभा खेतान, प्रकाशन–हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि., संस्करण–2002) इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि पुरुष ने या समाज व्यवस्था ने उसे कभी एक साथी के रूप में स्वीकार नहीं किया और यदि ऐसा है तो पुरुष दिवस मनाने के लिए भी एक तिथि तय की जाए, ताकि महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को अपने और पुरुषों के बीच खिंची हुई रेखा या पाटी गई खाई का आभास न हो।

वैदिक काल में भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा तथा यज्ञ आदि में बैठने का पूर्ण अधिकार था। परन्तु मध्यकाल में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक विसंगतियों आदि के चलते सबसे बुरी अवस्था महिलाओं की हुई। कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं के जीवन में एक गतिशीलता आई। इस अविरत गतिशीलता से ही आधुनिक भारत में महिलाओं को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष प्रतिपक्ष की नेता, आई.पी.एस. अधिकारी, आलेपिंक में स्वर्ण विजेता, विश्वसुंदरी आदि पदों पर पहुँचने का गौरव प्राप्त हुआ।

परन्तु आज भी भारत में महिलाओं की स्थिति बेहतर नहीं। 2012 में थॉम्सन रॉयटर्स फाउंडशन के एक सर्वेक्षण में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और हिंसा जैसे कई विषयों पर महिलाओं की स्थिति की तुलना की गई। एक चिंताजनक सत्य सामने आया जिसमें 19 देशों की सूची में सबसे अंतिम पायदान पर भारत खड़ा है, नहीं पड़ा है।

निष्कर्ष

महिलाओं की स्थिति म यदि सुधार की मंशा समाज बना चुका है तो सर्वप्रथम उसे जड़ बन चुकी नारी में एक स्पंदन पैदा करना होगा। उसे परिस्थिति विशेष में उचित उपयोग के साथ जीवन को पूर्ण रूप से विकसित करना सिखाना आवश्यक है। प्राचीन गौरव गाथा का प्रदर्शन–मात्र बने रहने की उसकी छवि में सेंध लगाकर वर्तमान युग में एक सहभागी के रूप में उसे स्वीकार किया जाना ही हर दिन महिला दिवस का रूप होगा। कुल मिलाकर उसे जीवन जीने की कला में सहभागी बनाना है, हाशिए से उठाकर सहगामी बनाना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कामायनी – जयशंकर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, सस्करण–1994.
2. इन्द्रप्रस्थ भारती, अप्रैल–जून, 2013.
3. श्रृंखला की कड़ियाँ – महादेवी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण–2012.
4. 'स्त्री उपेक्षिता' सीमोन द बोउवार, अनु. प्रभा खेतान, हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रा.लि. प्रकाशन, संस्करण–2002.